मूल्य 1 रूपया

कृषक समाचार

भारत कृषक समाज का मासिक मुख पत्र

वर्ष 60 | अक्टूबर, 2015 | अंक 10

सभापति का पत्र :

दिल्ली में सामाजिक कार्यकर्ता और नीति निर्माता राष्ट्र को संसाधनों का पुनर्वितरण करके समृद्धि को प्राप्त करने की कोशिश में बुरी तरह से विफल रहे हैं। ग्रामीण आबादी को उनके पोषण की आवश्यकता को विकसित करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में मदद करने के बजाऐ सरकार किसानों सहित ग्रामीण आबादी के लिए भोजन को फिर से पुनर्वितरण करने की कोशिश कर रही है।

पुनर्वितरण के लिऐ सस्ता भोजन इकट्ठा करने की खोज में सरकार ने किसानों को उनकी उपज के लिऐ भुगतान की जाने वाली कीमत को सीमित कर दिया है। जब अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में खाद्य पदार्थों की कीमतें उच्च स्तर पर थी और जिससे अनाज के भंडार का निर्माण किया जा सकता था, उस वक्त इन्होंने निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया।

इन रोकों की वजह से किसान उपनी उपज के लिऐ उच्च कीमत लेने में असमर्थ रहे। इन सभी कारकों की वजह से कृषक समुदाय की मदद होने की बजाऐ उनके दुखों में वृद्धि हुई। संसाधनों का पुनर्वितरण विकास का एक स्थायी मॉडल नहीं है। हम आगे के लिऐ किसान परिवारों की आर्थिक आत्म–निर्भरता का समर्थन करते हैं।

कभी–कभी नीति निर्माता समस्याओं का कारण और परिणामों का अंतर करने में असमर्थ हो जाते हैं। अधिकांश बार वह जानते हैं कि समस्याओं को हल करने के बजाऐ परिणामों को कम करना ज्यादा आसान है।

अदूरदर्शिता और फिर से चुने जाने की राजनीतिक मजबूरियों के कारण संसाधनों को तत्काल परिणामों को हल करने के लिऐ उपयोग किया जाता है जिससे मौजूदा समस्या और गंभीर हो जाती है। उदाहरण के लिऐ किसानों

को समृद्ध बनाने के बजाऐ उनके गरीबी के प्रभाव को कम करने के लिऐ उन्हें सस्ते भोजन की आपूर्ति की जा रही है। यह तर्क खारिज कर देता है।

– अजय वीर जाखड़
अध्यक्ष, भारत कृषक समाज
@ajayvirjakhar

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

कैसे करें दाल मटर का बीजोत्पादन

[1] श्री हरिगोविन्द, [2] श्री आर.पी. शाह और [3] श्री एम.पी. सिंह

उत्तराखण्ड में कुल दलहनी फसलें लगभग 61.0 हजार हैक्टर क्षेत्रफल में लगायी जाती हैं, जिसमें लगभग 36 हजार टन दालों का उत्पादन होता है। यह कुल मांग का मात्र 23.2 प्रतिशत है। राज्य में कुल दालों की खपत लगभग 1.55 लाख टन है।

पर्वतीय क्षेत्रों में दालों का उत्पादन एवं क्षेत्रफल बढ़ने की बहुत संभावनाऐं हैं। विशेष रूप से रबी के मौसम में जहां सिर्फ मसूर की खेती अधिक क्षेत्रफल पर की जाती है, किन्तु दाल मटर की खेती बहुत कम क्षेत्रफल पर की जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र, उत्तरकाशी एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, बागेश्वर के कृषि विशेषज्ञों द्वारा विगत वर्षों में दाल मटर की प्रजाति वी.एल.–42 के 711 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कृषकों का दाल मटर की खेती के प्रति रूझान बढ़ रहा है।

उन्नत बीजों की समस्या को देखते हुऐ उन्हें बीज उत्पादन का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है ताकि दाल मटर का विस्तार अधिक क्षेत्रफल पर हो सके और दालों की समस्या का समाधान हो सके। पर्वतीय कृषकों को दाल मटर के बीज उत्पादन करने के लिऐ किन सस्य कियाओं को अपनाना चाहिऐ इसी पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रस्तुत की जा रही है।

प्रश्नः बीज उत्पादन हेतु भूमि का चयन एवं खेती की तैयारी कैसे करनी चाहिए ?

दाल मटर की अच्छी उपज के लिऐ बलुई दोमट व दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है तथा खेत में जल निकास का उचित प्रबंध होना चाहिऐ। खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करने के उपरान्त आवश्यकतानुसार एक या दो जुताइयां देसी हल से करके मिट्टी को भुरभुरा बना लें और पाटा लगा दें ताकि बुआई के समय खेत में नमी बनी रहे।

प्रश्नः खेत का चुनाव किस आधार पर करें ?

बीजोत्पादन हेतु सबसे अच्छी उर्वरता वाले खेतों का चुनाव करना चाहिऐ। यह ध्यान रखना चाहिऐ कि पिछले वर्ष वही फसल न लगायी गयी हो जिसका बीजोत्पादन करना है।

प्रश्नः बीज का स्रोत क्या हो ?

प्रमाणित तथा आधारीय बीज किसी भी मान्य संस्था या बीज प्रमाणीकरण एजेन्सी से लेना चाहिऐ जिससे हमें बीज की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके।

प्रश्नः मटर की दो प्रजातियों के बीजों के बीच कितनी दूरी होनी चाहिऐ ?

बीजों की शुद्धता बनाये रखने के लिऐ मटर की दो भिन्न प्रजातियों के खेतों के बीच की दूरी आधारीय बीज के लिऐ कम से कम 10 मीटर और प्रमाणित बीज के लिऐ कम से कम 5 मीटर चाहिऐ। **प्रश्नः बीज दर एवं बुआई का समय क्या हो ?**

दाल मटर की बुआई के लिये 80 कि.ग्रा. बीज (1.6 कि.ग्रा. प्रति नाली) प्रति हैक्टर की दर से पर्याप्त होता है। बुआई का समय अक्टूबर का दूसरा पखवाड़ा उपयुक्त होता है।

प्रश्नः बीजोपचार एवं बुआई की विधि के बारे में भी जानकारी दें ?

दाल मटर का बीज बोने से पहले कवकनाशी रसायन कार्बेन्डाजिम या थायरम की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बीजों को बोना चाहिये, जिससे फसल को बीज जनित रोगों से बचाया जा सके। बीज की बुआई करते समय खेत में पर्याप्त नमी का होना आवश्यक है।

बीज की बुआई हल के पीछे कूंडों में करनी चाहिऐ अथवा कुठले आदि की मदद से कूंड निकालकर बुआई कतारों में करनी चाहिऐ। कूंड से कूंड अथवा कतार से कतार की दूरी 30 सें.मी. रखनी चाहिऐ। बीज की बुआई 3–4 सें. मी. से अधिक गहराई पर नहीं करनी चाहिऐ।

प्रश्नः खाद एवं उर्वरक का प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए ?

उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना उपयुक्त रहता है। सब्जी मटर की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिये 10–15 टन प्रति हैक्टर की दर से सड़ी गोबर (2–3 क्विंटल प्रति नाली) डालना चाहिऐ रासायनिक खादों को 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 40 कि.ग्रा. पोटाश (0. 4 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 1.2 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 0.8 कि.ग्रा. पोटाश प्रति नाली) प्रति हैक्टर की दर से देना चाहिऐ। बुआई से पूर्व नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा देनी चाहिऐ। नाइट्रोजन की शेष मात्रा निराई–गुड़ाई के बाद देनी चाहिऐ।

प्रश्नः खरपतवार नियंत्रण करने का सही तरीका क्या है ?

दाल मटर की बुआई के 25–30 दिन बाद प्रथम निराई–गुड़ाई तथा दूसरी 45 दिन बाद करनी चाहिऐ। रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण के लिऐ पेन्डीमिथलीन 0.5 कि.ग्रा. अथवा एलाक्लोर 1.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से बीज बुआई के पश्चात 600–800 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिऐ।

प्रश्नः सिंचाई कितनी बार की जानी चाहिए ?

वर्षा न होने पर भूमि में नमी के अभाव में आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिऐ। फूल आने से पूर्व आवश्यकतानुसार 1–2 सिंचाई करनी चाहिऐ। पाला पड़ने की आशंका होने पर सिंचाई करना लाभदायक रहता है। फलियों में दाने बनते समय सिंचाई बहुत आवश्यक होती है।

प्रश्नः रोगिंग या अवांछनीय पौधों को किस प्रकार निकाला जाना चाहिए ?

बीज उत्पादन के लिये यह बहुत ही महत्वूपर्ण प्रकिया है। रोगिंग का कार्य फूल, तनों और बीज के रंग, गठन आदि के आधार पर किया जाता है। अवांछनीय पौधे जैसे कि खरपतवार, रोगग्रस्त पौधे, अन्य प्रजाति के पौधे तथा उसी प्रजाति के भिन्न पौधों को हटाना चाहिए ताकि बीज फसल की आनुवंशिक शुद्धता बनी रहे।

यह प्रकिया रोगिंग कहलाती है। दाल मटर के स्व–परागित फसल होने के कारण यह कार्य फूल आने पूर्व आरंभ कर फसल के पकने तक किया जाता है।

प्रश्नः अवांछित पौधों की अनुमान्य सीमा कितनी होनी चाहिऐ ?

आधारीय बीज के लिऐ–अवांछनीय पौधे–0.10 प्रतिशत तथा प्रमाणित बीज के लिये–अवांछनीय पौधे–0.50 प्रतिशत से अधिक नहीं।

प्रश्नः दाल मटर की फसल में कौन–कौन से रोगों एवं कीटों का प्रकोप होता है ?

पर्वतीय क्षेत्रों में दाल मटर की फसल में लगने वाले मुख्य रोग बीज एवं मूल विगलन, उकठा, सफेद विगलन, चूर्णिल आसिता तथा मुख्य कीट फली बेधक एवं पत्ता सुरंगक हैं।

प्रश्नः बीज एवं मूल विगलन का नियंत्रण कैसे हो ?

अंकुरण से पूर्व एवं पौधे उगने के बाद बीज गल जाते हैं। चिकनी मिट्टी में अधिक नमी होने पर रोग का प्रकोप बढ़ जाता है। इसकी रोकथाम के लिऐ

बुआई से पूर्व थायरम या कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा से प्रति कि.ग्रा. बीज को उपचारित करके बोना चाहिऐ।

प्रश्नः म्लानि या उकठा के प्रकोप को कैसे कम किया जा सकता है ?

प्रभावित पौधों की ऊपरी भाग का पीला पड़ना, पत्तियों का पीला पड़कर झड़ना, जडों का कमजोर होना आदि इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। निचली पत्तियों के गिरने के बाद पौधों का ऊपरी हिस्सा मुरझाकर सूखकर गिर जाता है।

रोगी पौधों की जडों को चीरकर देखने पर पूरा भाग भूरा दिखाई देता है। बीजों को बुआई से पूर्व थायरम या कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति कि. ग्रा. बीज को उपचारित करके बोना चाहिऐ।

प्रश्नः सफेद विगलन से किस प्रकार हानि होती है ?

इस रोग से फसल में काफी हानि होती है। फरवरी में फूल आते समय इस बीमारी का प्रकोप सर्वाधिक होता है। इस रोग में भूमि में स्पर्श करने वाले पौधों के हिस्से पर धब्बे बन जाते हैं। रोगी हिस्सों पर सफेद रूई सी दिखाई देती है।

रोगग्रस्त भाग गल जाता है एवं रोगी भागों में फफूंद के काले–काले ढांचे बनते हैं, जो अगले वर्ष रोग को फैलाने में सहायक होते हैं। पौधें के निचले हिस्सों पर सफेद विगलन रोग के लक्षण दिखाई देते ही एक ग्राम कार्बान्डाजिम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिऐ।

प्रश्नः चूर्णिल आसिता रोग के लक्षण क्या है ?

इस रोग में पत्तियों, तने तथा फलियों में सफेद चूर्ण दिखाई देता है। अधिक प्रकोप होने पर पौधे धूल भरे हो जाते हैं। फलियों की चमक कम हो जाती है, रोग का प्रकोप शुष्क एवं गर्म मौसम में अधिक होता है।

चूणिल आसिता के सफेद धब्बे दिखाई देने पर बारीक गंधक का बुरकाव (25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर) करना चाहिऐ अथवा घुलनशील गंधक का दो ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिऐ।

प्रश्नः फली छेदक कीट किस प्रकार नुकसान पहुंचाते हैं ?

फलियों में दानों को हरे रंग को सूंडियां खाती हैं। फलियों में दाने कम एवं छोटे निकलते हैं।

प्रश्नः पत्ता सुरंगक कीट के प्रकोप की पहचान कैसे की जाऐ ?

पत्तों पर सांप की तरह सफेद लाइनें दिखाई देती हैं। ये कीट पत्तों के ऊपरी सतह के नीचे हरे पदार्थ को खाकर सुरंग बनाते हैं।

प्रश्नः कीटों का प्रभावी प्रबंधन कैसे संभव है ?

फली छेदक तथा पत्ता सुरंगक कीटों के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफास या एण्डोसल्फान नामक दवा की दो मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिऐ।

प्रश्नः फलियों की तुड़ाई किस समय की जानी चाहिऐ ?

मटर फलियां लगभग 90 प्रतिशत भूरे रंग की हो जाऐं तब पौधों को जड़ समेत उखाड़ लिया जाता है। इसके बाद लगभग एक सप्ताह तक धूप में सुखाने के बाद बीजों को सूखी फलियों से डंडे की सहायता से कूट कर अलग कर लिया जाता है। इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिऐ कि बीजों का अन्य प्रजातियों से मिश्रण न होने पाऐ।

प्रश्नः बीज संसाधन करते वक्त किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिऐ ?

बीज संसाधन के समय विशेष बल इस बात पर दिया जाता है कि निष्क्रिय पदार्थ (भूसा, कंकर आदि), हल्के, छोटे, कटे–फटे बीज और खरपतवारों के बीज को अलग किया जाऐ। मशीन उपलब्ध न होने पर यह कार्य हाथ द्वारा भी किया जाता है।

प्रश्नः दाल मटर की औसत उत्पादकता क्या है ?

पर्वतीय क्षेत्रों में वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर दाल मटर को 12–16 क्विंटल प्रति हैक्टर बीज (सूखा दाना) की उपज प्राप्त हो जाती है।

प्रश्नः भण्डारण की उचित विधि क्या होनी चाहिऐ ?

बीज के उचित भण्डारण के लिऐ भण्डार गृह में बीज को दीवारों से एक फीट की दूरी पर लकड़ी या प्लास्टिक के प्लेटफार्म पर रखना चाहिऐ। बीज को भण्डार गृह में रखने के बाद सल्फास के 10 ग्राम का एक पाउच 10 क्विंटल बीज के लिऐ पर्याप्त होता है। इस बात का ध्यान रखना चाहिऐ कि भण्डारण के उपरान्त हवा का आगमन नहीं यानी कि भण्डार गृह को हवा से मुक्त रखना चाहिऐ।

---

1. विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, चिन्यालीसौड, उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड) ; 2. विषय वस्तु विशेषज्ञ ; 3. प्रक्षेत्र प्रबंधक, कृषि विज्ञान केन्द्र, काफलीगैर, बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

पिछले सम्मेलनः

'कृषि ऋण' पर बैठक

21 सितंबर, 2015, रिजर्व बैंक कार्यालय, मुंबई, (महाराष्ट्र),

प्रतिभागियों ने 'कृषि ऋण' के मुद्दों और समाधान पर विचार–विमर्श किया।

प्रतिभागि थेः

- श्री रघुराम राजन, माननीय गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक
- प्रौफेसर आर. रामाकुमार, विकास अध्ययन के प्रौफेसर एवं डीन, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान
- सुश्री कविता कुरूगंती, राष्ट्रीय संयोजक, सतत एवं समग्र कृषि गठबंधन (आशा)
- श्री रशपाल सिंह, सचिव, खुँईसरवर सहकारी सोसायटी
- श्री बासाप्पा बेलाकुड़, अध्यक्ष, बसवेश्वर शहरी केडिट सौहार्द सहकारी नियमित, कलौली
- श्री आर. सी. गौरी, अपर प्रबंध निदेशक, पंजाब राज्य सहकारी बैंक
- श्री जयप्रकार गुराजा, चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर, स्टार एग्री
- श्री राज कुमार भाटिया, कमीशन एजेंट, आजादपुर सब्जी मंडी
- श्री श्रीकांत बरहटे, विदर्भ के ग्रामीण मुद्दों पर विशेषज्ञ
- श्री पी.ऐस.ऐम. राव, अर्थशास्त्री, विश्लेषकर और स्तंभकार
- श्री परंजॉय गुहा ठाकुरता, विश्लेषकर, पत्रकार और लेखक
- श्री एच.आर. दवे, उप–प्रबंध निदेशक, नाबार्ड

बैठक में हिस्सा लेने वालों में भारत कृषक समाज (बी.के.ऐस.) के भी सदस्य थेः

RNI No. 831/1957
पोस्टल रजि० DL (S)-01/3092/2015-17
पहले भुगतान किये बिना पोस्ट करने का लाइसेंस नं० U(C)-92/2015-17

प्रकाशन की तिथि : 1 अक्टूबर, 2015
नई दिल्ली पी.एस.ओ, नई दिल्ली–1,
तारीख 4 एवं 5, अक्टूबर 2015

- श्री के.आर. आन्नु गोड़र, उपाध्यक्ष, बी.के.ऐस.
- श्री विश्वासराव आनंदराव पाटिल, उपाध्यक्ष, बी.के.ऐस.
- डॉ० वसंत लुंगे पाटिल, महाराष्ट्र से बी.के.ऐस. सदस्य
- डॉ० नरेन्द्र राणा, नई दिल्ली से बी.के.ऐस. सदस्य
- श्री मुरलीधर पाटिल, महाराष्ट्र से बी.के.ऐस. सदस्य
- श्री दीपक नामदेवराव लोखंडे, महाराष्ट्र से बी.के.ऐस. सदस्य
- श्री गोविंद लालकृष्ण पाटिल, महाराष्ट्र से बी.के.ऐस. सदस्य

बैठक में कर्नाटक कृषक समाज के सदस्यों में भी हिस्सा लिया:

- श्री तुकाराम ऐस. मौरे
- श्रीमती आशा भरत मात्रे

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

इफको
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

भारत कृषक समाज ए–1, निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली– 110013, फोनः 011–24359509, 65650384, ई–मेलः ho@bks.org.in, वैबसाईटः www.farmersforum.in के लिए श्री उरविन्द्र सिंह भाटिया द्वारा सम्पादित, मुद्रित व प्रकाशित तथा एवरेस्ट प्रेस, ई 49/8 ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस –2, नई दिल्ली –110020 द्वारा मुद्रित।